Lec-5.

Smt. Shanta Singh
Sr. Asst. prof.
Dept. of L.S.W.
SNSRKS College,
Saharsa

श्रमिक संघों के उद्देश्य (Objectives of Trade Unions).

श्रम संघ का उद्देश्य एवं ध्येय देश, काल एवं परिस्थिति पर निर्भर करता है। एक ही देश में विभिन्न परिस्थितियों के कारण उनके उद्देश्यों में अन्तर हो सकता है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत श्रमिकों, श्रमसंघ के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु नियोक्ता तथा श्रमिकों के हितों में टकराव होता है। एक के हित में दूसरे की हानि होती है। श्रमिक कम काम करना चाहते हैं और ज्यादा मजदूरी प्राप्त करने का हमेशा उद्देश्य रखते हैं। जबकि पूँजीपति कम मजदूरी देकर अधिक कार्य लेने की मनसा रखते हैं। इन विचारों के टकराव के कारण दोनों के बीच में आये दिन विवाद उत्पन्न होते रहते हैं। श्रमिक संघों के उद्देश्यों के सम्बन्ध में कई तरह के विचार प्रस्तुत किये गये हैं। उदाहरणार्थ, मार्क्स (Marx) तथा एंजिल्स (Engels) ने वर्ग-संघर्ष और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (class struggle and dialectical materialism) की व्याख्या करते हुए श्रमिक संघों को समाज में मूलभूत क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक समझा। उनके अनुसार श्रमिक संघों का उद्देश्य पूँजीवाद की जड़-स्रोत नष्ट करना है। वेब्स (Webbs) के अनुसार श्रम संघवाद उद्योग जगत में जनतंत्र के सिद्धान्तों का विस्तार है और श्रमिक संघ वे संस्थाएँ हैं जिनका उद्देश्य प्रबन्धकीय तानाशाही को समाप्त करना, वैयक्तिक कर्मचारियों को शक्तिशाली बनाना और कार्य की दशाओं

Scanned with CamScanner

के निर्धारण में अहं उचित स्थान दिलाना होता है। वेब्स की धारणा है कि वर्ग-संघर्ष तो सदैव बना ही रहेगा, लेकिन समानता और सामूहिक प्रयासों द्वारा उसे कम किया जा सकता है। इसी प्रकार जी. डी. एच. कोल (G.D.H. Cole) का कहना है कि यद्यपि श्रमिक संघों का तात्कालिक उद्देश्य कर्मचारियों के लिए कार्य की अच्छी दशाएँ तथा अधिक मजदूरी उपलब्ध कराना है, किन्तु किन्तु उनका अन्तिम उद्देश्य तो उद्योग पर कर्मचारियों का नियंत्रण लाना है। एलैन फ्लैंडर्स (Allen Flanders) के विचार में श्रमिक संघों के उद्देश्य हैं—श्रमिकों की मजदूरी तथा कार्य की दशाओं में सुधार लाना, नागरिक के रूप में श्रमिकों के जीवन को ऊँचा उठाना, आर्थिक जीवन में सामाजिक नियंत्रण के क्षेत्र को व्यापक करना तथा उस नियंत्रण में भाग लेना।

श्रमिक संघों के उद्देश्य के सम्बन्ध में पर्लमन (Perlman) के विचार उल्लेखनीय हैं। उनके अनुसार श्रमिक संघों का अपने को देश में विकसित दर्शन होता है। यह दर्शन श्रमिकों के अनुभव और मनोविज्ञान पर आधारित होता है। दिन-प्रति-दिन के अनुभवों पर विकसित होने के कारण श्रमिक संघों का एक ही उद्देश्य होता है और वह है श्रमिकों के कार्य सुरक्षित बनाये रखना तथा कार्य एवं जीवन की दशाओं में निरंतर सुधार लाना। ऐसे श्रमिक संघों का आर्थिक व्यवस्था की आधारभूत पुनः संरचना या विभिन्न विचार धाराओं या सिद्धान्तों से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

श्रमिक संघों के उद्देश्यों के सम्बन्ध में कई अन्य विद्वानों

Scanned with CamScanner

ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये हैं। ये विचार अलग-अलग समय एवं संदर्भों में दिये गए हैं तथा ये सर्वत्र एवं सभी दशाओं में लागू नहीं होते। फिर भी, इनसे श्रमिक संघों के मुख्य उद्देश्यों की जानकारी होती है। वास्तव में श्रमिक संघों का एक ही व्यापक उद्देश्य होता है और वह है अपने सदस्यों के हितों की रक्षा और उन्नयन। श्रमिक संघों के अन्य उद्देश्य इसी सर्वोच्च लक्ष्य से सम्बन्धित होते हैं। सुविधा की दृष्टि से श्रमिक संघों के विभिन्न उद्देश्यों और लक्ष्यों का उल्लेख किया जाता है। इनमें कुछ उद्देश्य तो दीर्घकालीन तथा कुछ अल्पकालीन होते हैं

श्रमिक संघों के दीर्घकालीन उद्देश्य (Long-term objectives of Trade Unions) :—

श्रमिक संघों के दीर्घकालीन उद्देश्य सामान्यतः श्रमिक वर्ग न कि केवल उनके सदस्यों के हित से सम्बन्धित होते हैं। श्रमिक संघों के दीर्घकालीन उद्देश्यों में निम्नलिखित मुख्य हैं :

(i) आर्थिक सुरक्षा (Economic security)— श्रमिक संघों के दीर्घकालीन उद्देश्यों में श्रमिकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना अत्यन्त ही महत्वपूर्ण होता है। सभी प्रकार के श्रमिक संघ चाहते हैं कि उनके सदस्यों या सर्वसाधारण श्रमिकों को अपने तथा अपने परिवार के सदस्यों के जीवन-यापन के लिए आय की निरन्तरता बनी रहे। यही कारण है कि श्रमिक संघ अधिक मजदूरी तथा अन्य प्रकार के आर्थिक लाभों के लिए शुरू से ही प्रयास करते आये हैं।

(ii) श्रमिकों की सामाजिक प्रस्थिति में सुधार (Improvement in the social status of workers)— श्रमिकसंघ का एक

महत्वपूर्ण दीर्घकालीन उद्देश्य श्रमिकों की सामाजिक प्रास्थिति में सुधार लाना है। श्रमिक संघों के विकास के प्रारंभिक चरणों में श्रमिकों की सामाजिक प्रास्थिति निम्न कोटी की थी। अनेक वर्षों तक संघर्ष करने के बाद ही श्रमिकसंघ श्रमिकों की सामाजिक प्रास्थिति सुधारने में सफल हुए। श्रमिक संघ चाहते हैं कि श्रमिक समाज के अन्य वर्गों की तुलना में निम्न नहीं हों।

(iii) राजनीतिक अधिकारों एवं प्रभावों का विस्तार (Expansion of political rights and influence)— श्रमिकसंघों का एक दीर्घकालीन उद्देश्य अपने राजनीतिक अधिकारों एवं प्रभावों में वृद्धि करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कई देशों में श्रमिक संघों ने अपने राजनीतिक दलों की स्थापना की है। कुछ देशों में उन्होंने राजनीतिक दलों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया है। सिन्डिकलिस्ट (syndicalist) प्रकार के श्रमिक संघ हड़ताल तथा अन्य औद्योगिक कार्यवाही के माध्यम से राजनीतिक सत्ता श्रमिकों के हाथ सुपुर्द करना चाहते हैं। मार्क्सवाद में विश्वास रखने वाले श्रमिक संघ भी राज्य पर श्रमिकों का अधिकार चाहते हैं।

(iv) उद्योग पर श्रमिकों का नियंत्रण (Workers' control of industry)— कुछ श्रमिक संघ उद्योग पर श्रमिकों के नियंत्रण पर जोर देते हैं। गिल्ड समाजवादी तो विशेष रूप से श्रमिकों द्वारा ही उद्योगों का संचालन चाहते हैं। कई श्रमिक संघ अपने कार्य एवं रहने की दशाओं के निर्धारण में श्रमिकों की प्रभावी भागीदारी चाहते हैं। उनके दृष्टिकोण में नियोजन की शर्तों एवं दशाओं के निर्धारण में नियोजकों के परमाधिकार नहीं होने।

Scanned with CamScanner

(V) समाजवाद की स्थापना (Establishment of socialism) - कई पूँजीवादी देशों में श्रमिक संघ पूँजीवाद की जगह समाजवाद की स्थापना चाहते हैं। कई देशों में राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत अनेक श्रम-संघों के संविधान में इस आदर्श के उद्देश्य सम्मिलित किये गए हैं। भारत में भी ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) तथा हिन्द मजदूर सभा (HMS) के संविधानों में भी समाजवाद की स्थापना का उल्लेख है।

श्रमिक संघों के अल्प-कालीन उद्देश्य (Short-term objectives of Trade Unions):-

श्रमिक संघों के अल्पकालीन उद्देश्यों में निम्नलिखित अधिक महत्वपूर्ण हैं :-

(i) मजदूरी एवं अन्य आर्थिक परिस्थितियों में वृद्धि;
(ii) कार्य के कम घंटे;
(iii) कार्य की दशाओं में सुधार;
(iv) आवासीय सुविधाओं की उपलब्धि;
(V) स्वास्थ्य, सुरक्षा, मनोरंजन, शिक्षा, तथा अन्य कल्याणकारी सुविधाओं सुविधाओं की व्यवस्था;
(vi) पदोन्नति एवं प्रशिक्षण के अवसर;
(vii) दिन-प्रति-दिन के औद्योगिक प्रशासन में सहभागिता;
(viii) बीमारी, दुर्घटना, प्रसूति, बेरोजगारी, वृद्धावस्था आदि की स्थिति में सामाजिक सुरक्षा;
(ix) श्रमिकों के व्यक्तित्व के प्रति सम्मान;
(x) श्रमिकों को शोषण से मुक्ति दिलाना; तथा

Scanned with CamScanner

(xi) नियोजकों के श्रमिकों से सम्बन्धित क्रिया-कलापों पर निगरानी।

इनके अतिरिक्त श्रमिक संघों के अन्य अल्पकालीन उद्देश्य भी होते हैं। इन उद्देश्यों की प्राथमिकता का क्रम श्रमिक-संघ, समय, स्थान, आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना, श्रम शक्ति की बनावट, तथा उद्योग एवं मिल्स की प्रकृति के अनुसार बदलता रहता है। उदाहरणार्थ, प्रारम्भिक श्रमिक संघों ने मजदूरी और वृद्धि पर सर्वाधिक जोर दिया। बाद में कार्य के कम घंटों तथा और बाद में आर्थिक सुरक्षा पर अधिक जोर दिया जाने लगा। कालान्तर में कई श्रमिक संघों ने कल्याणकारी सुविधाओं तथा नौकरी की सुरक्षा पर बहुत जोर दिया। इस तरह, श्रमिक संघों के विभिन्न उद्देश्यों का सापेक्ष महत्व समय और परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है।

भारत में आजकल अधिकांश संघों में सभी श्रमिकों को, बिना किसी दस्तकारी या श्रेणी से सम्बन्धित अन्तर के, शामिल करते हुए या तो कारखाने या उद्योग के स्तर पर संगठित करने की सामान्य पद्धति पायी जाती है, फिर भी वायु यातायात, बन्दरगाहों व जहाजों के कुछ विभागों में तथा आधुनिक टेक्नोलोजी पर आधारित कुछ औद्योगिक संस्थाओं में दस्तकारी संघ भी स्थापित हुए हैं। 1964 में होने वाले भारतीय श्रम सम्मेलन (Indian Labour Conference) ने, जिसमें श्रेणी के आधार पर या दस्तकारी-संघों के विषय पर विचार किया था, यह निर्णय लिया कि ऐसे संघों की स्थापना को निरुत्साहित किया

Scanned with CamScanner

जाना चाहिए। राष्ट्रीय श्रम आयोग (1969) ने यह मत व्यक्त किया कि किसी कारखाने या उद्योग में कार्य कर रहे हस्तकारी संघों को एक औद्योगिक संघों में मिला देने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जहाँ किसी संस्था में सभी श्रेणियों के श्रमिकों को शामिल करने वाले औद्योगिक संघ को ही केवल सौदा करने वाले एजेण्ट के रूप में माना गया है, वहाँ यह उचित होगा कि एक संघ महत्वपूर्ण हस्तकारों या व्यवसायों के लिए अपनी उपसीमितियाँ स्थापित करे, जिससे उनकी खास समस्याओं पर काफी ध्यान दिया जा सके। सामान्य धारणा यह है कि केन्द्र एवं उद्योग के आधार पर संघों का संगठन ठीक है और अन्तिम रूप से उन्हें राष्ट्रीय फेडरेशनों के रूप में विकसित किया जाना चाहिए और हर उद्योग के लिए एक संगठन के लक्ष्य को पूरा करने की कोशिश की जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner